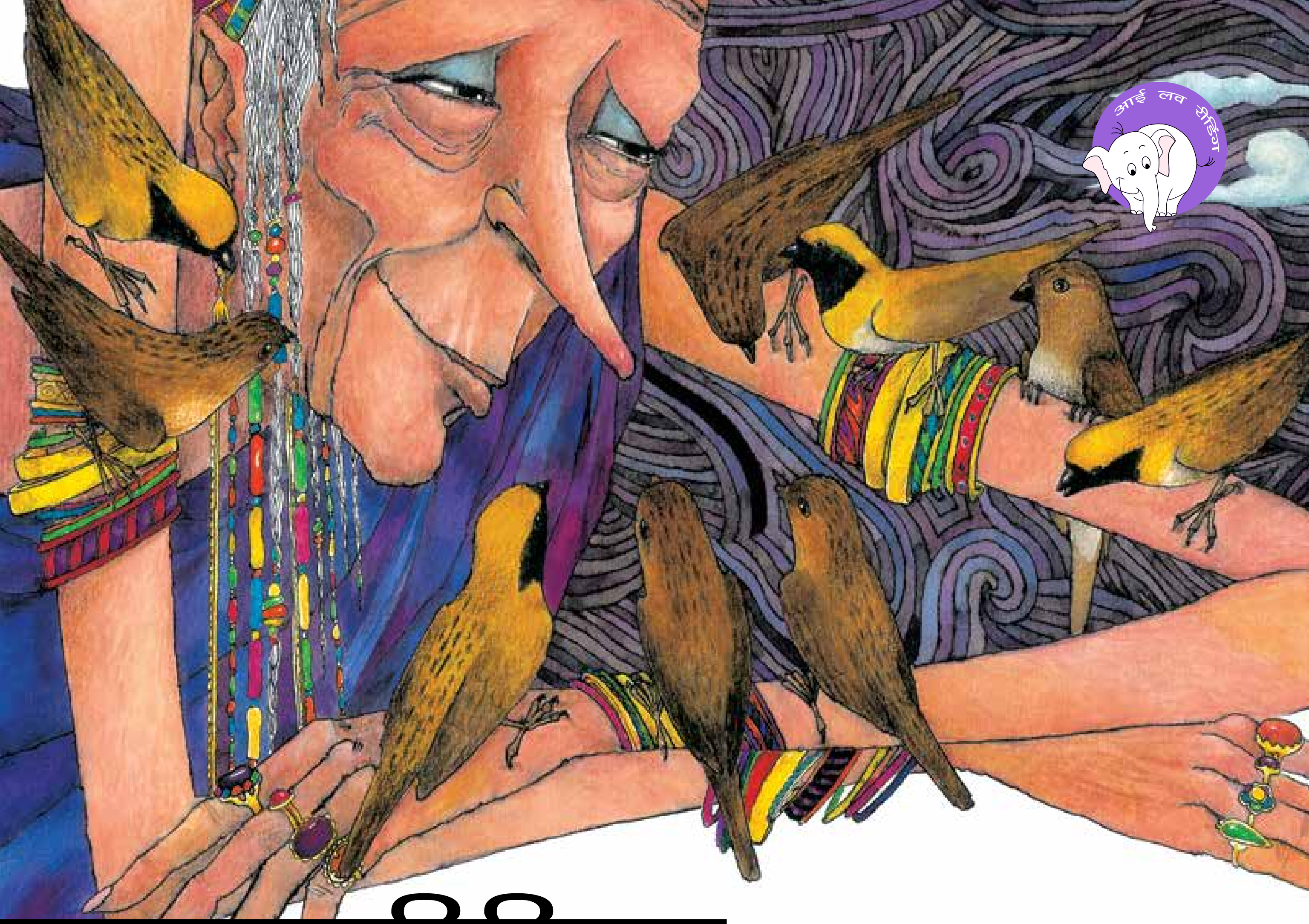

गिजिगाडू और टिमटिमाते जुगनू

गोपिनी करुनाकर | चित्रांकनः अतनु रॉय

कथा की 300एम थिंकबुक

एक बार, चाँदनी रात में,
कुछ सुनहरी चिड़ियाँ
उड़ते-उड़ते गईं
दूर देवताओं की
नगरी में।

और बोलीं, यह
गिजिगाड़ू, "देवूणा,
देवूणा!!!"

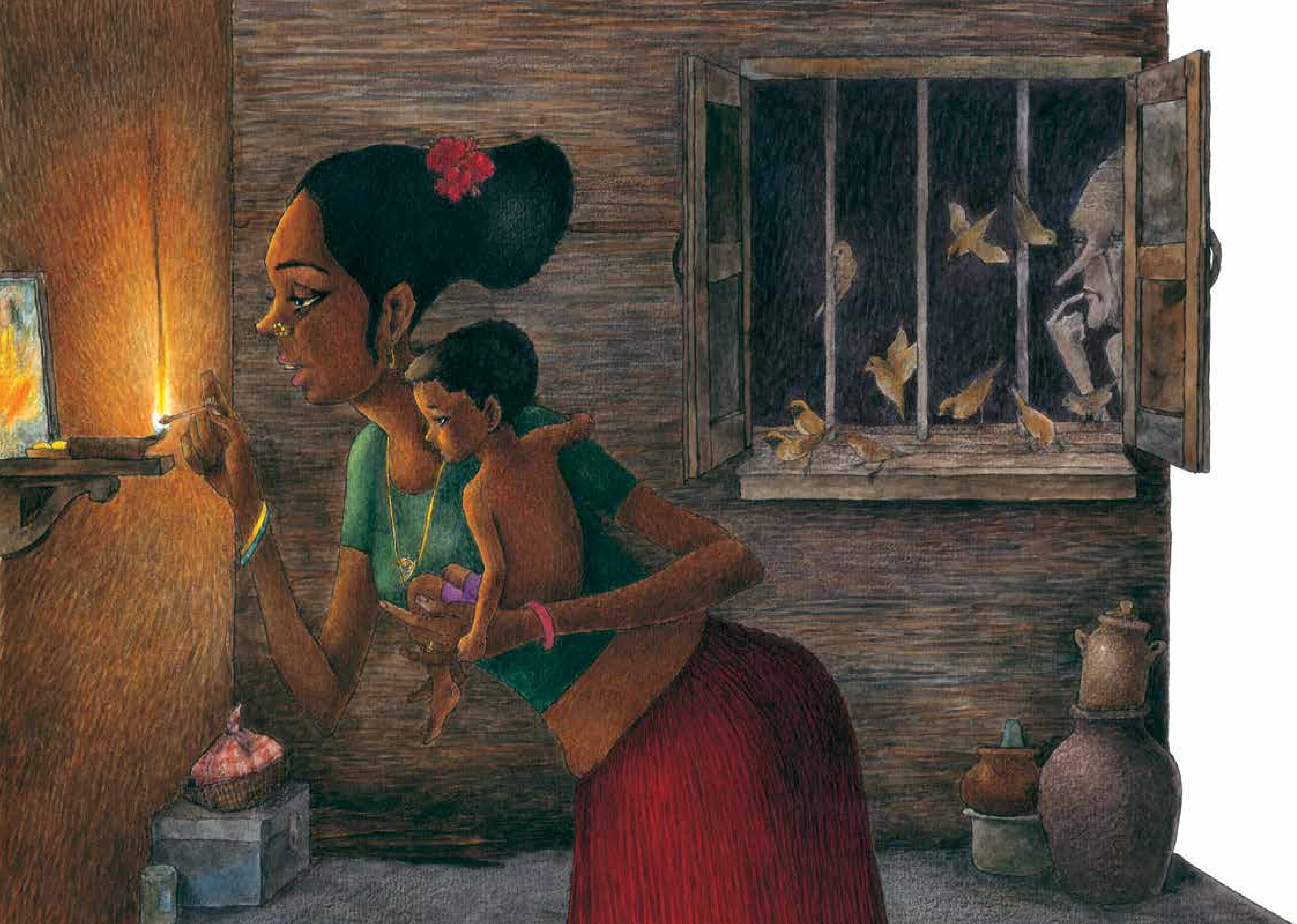

“इन्सानों
के घरों को
रोशन करते हैं
दीपक।”

“काले
नाग को रास्ता
दिखाती है उसके सिर
की मणि।”

“और उल्लुओं के पास हैं
उनकी जगमगाती
आँखें।”

“पर हमारे घोंसले हैं
घोर अंधकार में डूबे।
रात होते ही हमारे
बच्चे डर से कपकपाने
लगते हैं।”

“हमारी मदद करो देवूणा,
हमें रोशनी दो।”

देवूणा को भोली-भाली सुनहरी चिड़ियाँ बहुत अच्छी लगीं, और वह बोली - "मैं तुम्हारे साथ हूँ नन्हे दोस्तों, हम सब मिलकर इसका हल ज़रूर ढूँढ निकालेंगे।"

यह सुनकर सारे गिजिगाडू एकजुट हो सोचने लगे।

तभी एक गिजिगाडू ने
सुझाया इसका हल!

वह बोली, “आसमान से
घिसकर चाँद बनाता है
चमकीली धूल, जो
उड़ जाती है बनकर
जुगनू!”

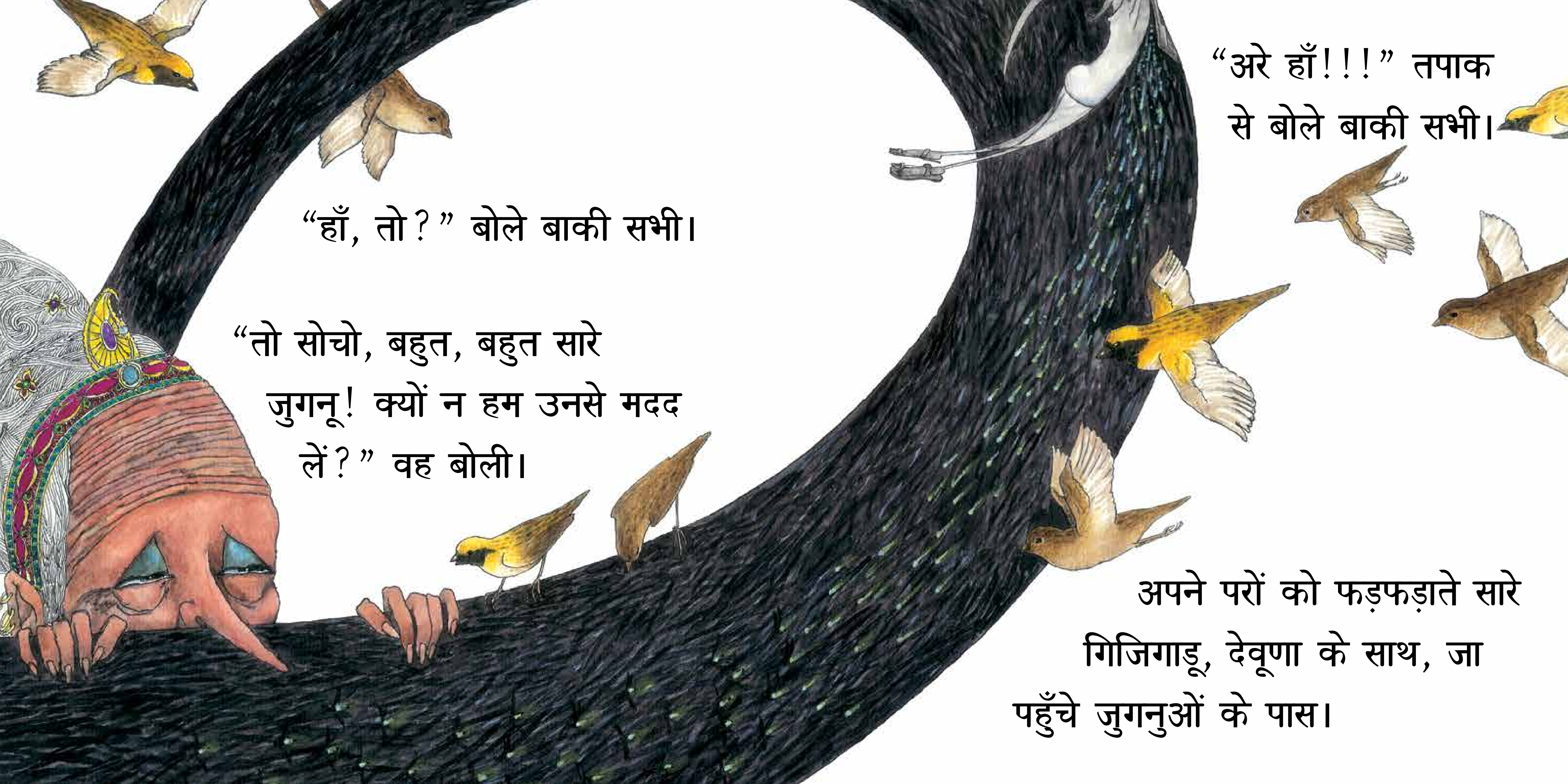

"हाँ, तो?" बोले बाकी सभी।

"तो सोचो, बहुत, बहुत सारे जुगनू! क्यों न हम उनसे मदद लें?" वह बोली।

"अरे हाँ!!!" तपाक से बोले बाकी सभी।

अपने परों को फड़फड़ाते सारे गिजिगाडू, देवूणा के साथ, जा पहुँचे जुगनुओं के पास।

उनके दोस्त, जुगनुओं ने, उनकी बात ध्यान से सुनी।

और हो गए मदद के लिए तैयार!

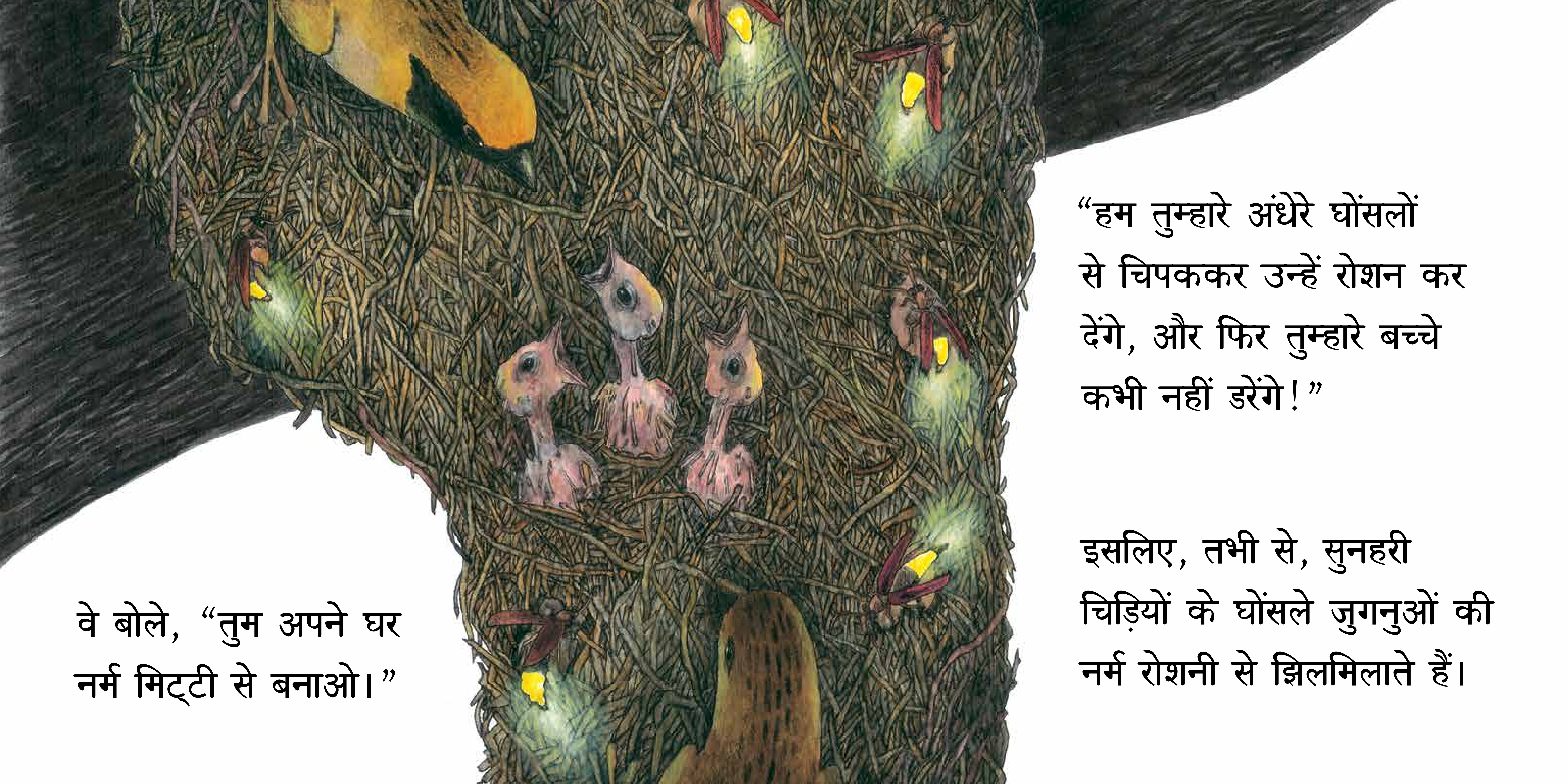

वे बोले, “तुम अपने घर
नर्म मिट्टी से बनाओ।”

“हम तुम्हारे अंधेरे घोंसलों
से चिपककर उन्हें रोशन कर
देंगे, और फिर तुम्हारे बच्चे
कभी नहीं डरेंगे!”

इसलिए, तभी से, सुनहरी
चिड़ियों के घोंसले जुगनुओं की
नर्म रोशनी से झिलमिलाते हैं।

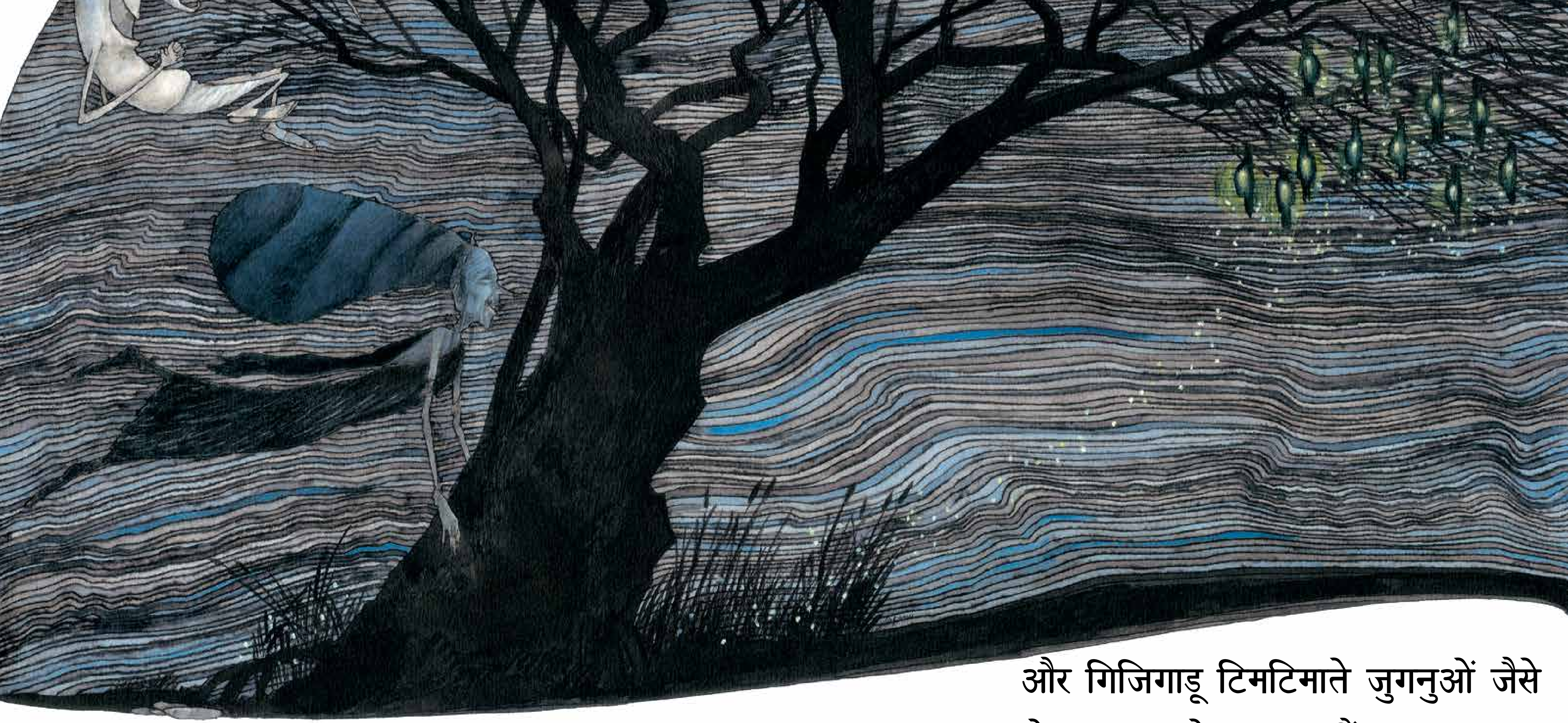

और गिजिगाडू टिमटिमाते जुगनुओं जैसे
दोस्त पाकर बेहद खुश हैं!

सहायक जीव

हमारी कहानी के चमकीली धूल वाले जुगनुओं जैसे कई और प्राणी भी हैं जो पशु-प्रदेश में सहायक होते हैं, और यहाँ तक कि मनुष्यों की भी सहायता करते हैं।

क्या आप मिला सकते हैं इन जीवों के वर्णन को इनके नामों से?

1. यह जीव एक ऐसी स्वादिष्ट चीज़ बनाता है जिसे देख भालुओं और मनुष्यों दोनों के मुँह में पानी भर आता है!
2. झीलों, तालाबों और आर्द्र क्षेत्रों में पाए जाने वाले इस जीव के परों के दो जोड़े होते हैं, जिन्हें यह लगभग प्रति सेकंड 300 बार फड़फड़ाते हैं।
3. दुनिया के सबसे सुंदर जीवों में से एक, यह अपनी विशेष बिन्दुओं के लिए जाने जाते हैं, और किसानों के लिए बेहद लाभदायक होते हैं।
4. यह जीव मच्छर, मक्खी, टिड्डे इत्यादि खाते हैं। बगीचों में इनका होना सहायक होता है, यह पेड़-पौधों को सुरक्षित व स्वस्थ रखते हैं। पर हाँ, इनके जालों से बच के रहना!
5. इन छोटे जीवों में अत्यंत ताकत होती है, गोबर को इकट्ठा करने और घुमाने की। यह मिट्टी को साफ़ रखने में और पोषक बनाने में मदद करते हैं।

मकड़ी

मधुमक्खी

व्याध पतंगा

गोबर बीटल

लेडी बग

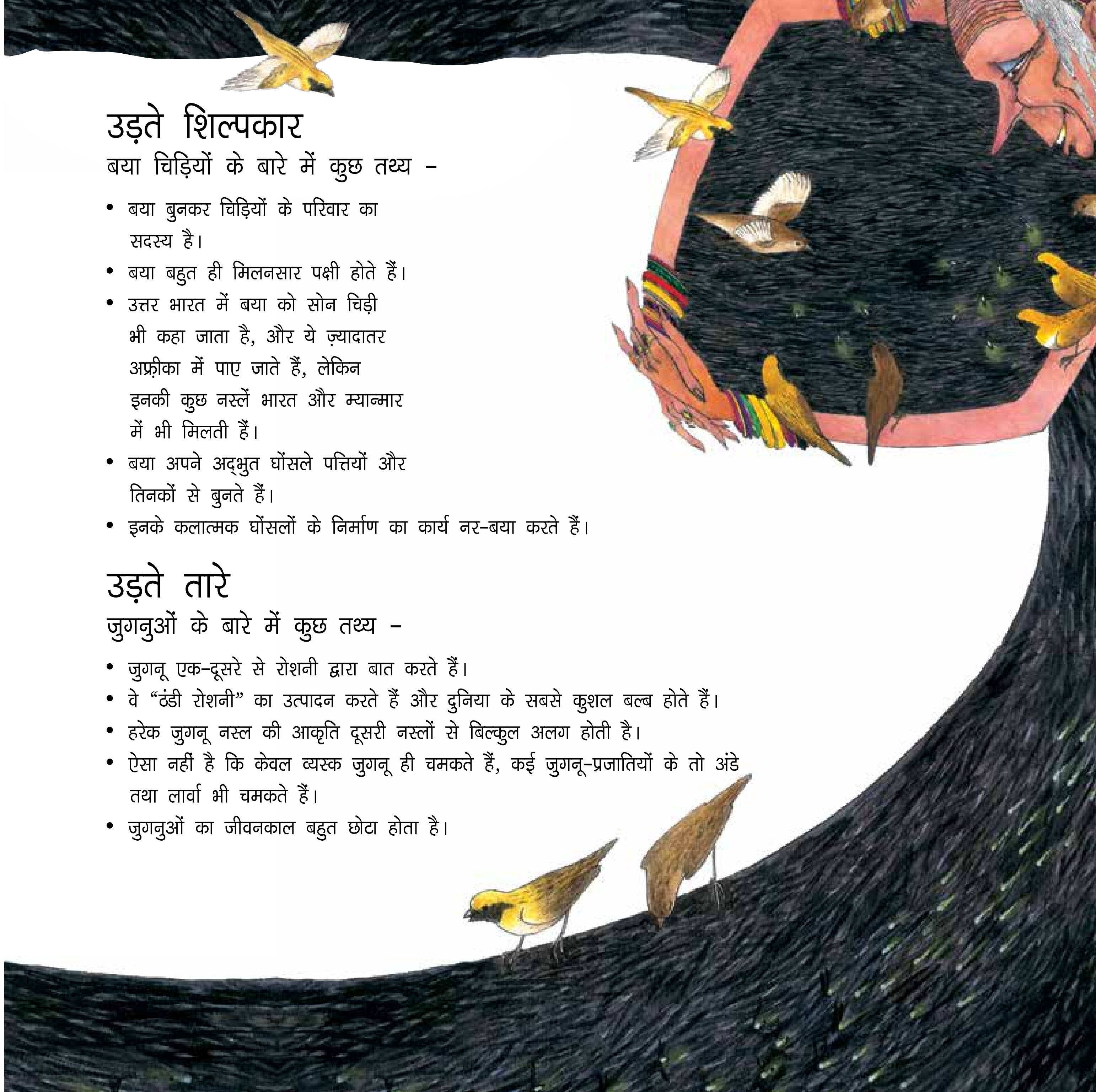

उड़ते शिल्पकार

बया चिड़ियों के बारे में कुछ तथ्य -

- बया बुनकर चिड़ियों के परिवार का सदस्य है।
- बया बहुत ही मिलनसार पक्षी होते हैं।
- उत्तर भारत में बया को सोन चिड़ी भी कहा जाता है, और ये ज़्यादातर अफ़्रीका में पाए जाते हैं, लेकिन इनकी कुछ नस्लें भारत और म्यान्मार में भी मिलती हैं।
- बया अपने अद्भुत घोंसले पत्तियों और तिनकों से बुनते हैं।
- इनके कलात्मक घोंसलों के निर्माण का कार्य नर-बया करते हैं।

उड़ते तारे

जुगनुओं के बारे में कुछ तथ्य -

- जुगनू एक-दूसरे से रोशनी द्वारा बात करते हैं।
- वे "ठंडी रोशनी" का उत्पादन करते हैं और दुनिया के सबसे कुशल बल्ब होते हैं।
- हरेक जुगनू नस्ल की आकृति दूसरी नस्लों से बिल्कुल अलग होती है।
- ऐसा नहीं है कि केवल व्यस्क जुगनू ही चमकते हैं, कई जुगनू-प्रजातियों के तो अंडे तथा लार्वा भी चमकते हैं।
- जुगनुओं का जीवनकाल बहुत छोटा होता है।

गोपिनी करुनाकर – गोपिनी, एक कवि और कहानीकार, तेलुगू फ़िल्म जगत के नामी निर्देशक एन शंकर के सहायक निर्देशक हैं। उनकी लिखी कविताएँ बहुत–सी तेलुगू दैनिक पत्रिकाओं में छप चुकी हैं। वे वाक् कथाओं – जो इन्हें अपनी अन्धी दादी माँ से विरासत में मिलीं – के विशेष प्रेमी हैं और अपनी लेखनी में उन्हें नए रूप में प्रस्तुत करते हैं। उनका कहना है कि कहानियों के माध्यम से वे अपने बचपन के सपनों और दृश्यों से भीगी यादों को सजीव करते हैं।

गीता धर्मराजन ने 1988 में बच्चों की लोकप्रिय पत्रिका, तमाशा!, से कथा की शुरुआत की। शिक्षा के क्षेत्र में विशेष रुचि और उनके अनूठे नेतृत्व ने जन्म दिया एक विशिष्ट कहानी प्रशिक्षण शैली को। उनका कहना है कि कहानियों के माध्यम से हम विभिन्नता से परिपूर्ण हमारे देश को एक जुट कर सकते हैं। वे द पैनसिलवेनिया गैज़ेट की संपादक रह चुकी हैं जो कि युनिवर्सिटी ऑफ़ पैनसिलवेनिया की पत्रिका है। बच्चों की पत्रिका टार्गेट के लिए भी उन्होंने अनेकों कहानियाँ लिखीं। उनके नाम से 31 किताबें और 400 से ज़्यादा लेख प्रकाशित हुए हैं।

अतनु रॉय – एक सौ से भी अधिक बच्चों की किताबों के चित्रकार, अतनु रॉय, ने अपना अधिकतर कल्पना कौशल बाल साहित्य को समर्पित किया है। उत्कष्ट रंगों से सजी उनकी विस्तृत छवियाँ नन्हे पाठकों के मन को छू लेती हैं। फिर यह कोई अचम्भे का कारण नहीं है कि अतनु, जो कि इंडिया टुड` में राजनैतिक कार्टूनिस्ट रह चुके हैं, को बच्चों की चित्रकारी के लिए कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है जैसे चिल्ड्रन्स चॉइस अवॉर्ड फ़ॉर बुक इलस्ट्रेशन और इब्बी सर्टिफ़िकेट ऑफ़ ऑनक फ़ॉर इलस्ट्रेशन। रॉय का स्टूडियो गुड़गाँव में है।

क कथा

कथा एक विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त गैर–लाभकारी संस्था है जो कि शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में सन् 1988 से काम कर रही है। गरीबी में रहने वाले बच्चों की शिक्षा को बढ़ावा देने का व उनके लिए विशेष किताबें बनाने का कथा के पास लगभग 30 साल का अनुभव है।

"भारत के मुकुट पर एक शैक्षिक हीरा!" – **नाओकी शिनोहरा, उपप्रबंध निर्देशक, आईएमएफ**

"कथा का काम इस विचार से प्रेरित है कि बच्चे अपने समुदायों में स्थायी बदलाव ला सकते हैं। जैसे कि बच्चे करते हैं (कथा की किताबों में)।" – **पेपरटाइगर्स**

"कथा बच्चों के लिए नर्म दिल है। तभी तो कथा बच्चों के लिए इतनी खूबसूरत किताबें बनाती है।" – **टाइम आउट**

"कथा दुनिया भर में उन रचनात्मक संगठनों के लिए एक उदाहरण है जो शहरों के सुधार के लिए काम करते हैं।"

– **चार्ल्स लैंड्री, *द आर्ट ऑफ़ सिटी मेकिंग***

पहला हिंदी संस्करण 2021
कृति स्वामित्व © कथा, 2012, 2021
लेखन कृति स्वामित्व © गोपिनी करुनाकर
चित्रॉकन कृति स्वामित्व © अतनु रॉय
स्वत्वाधिकार सुरक्षित। प्रकाशक की आज्ञा के बिना इस किताब के किसी भी भाग को छापना अथवा अन्य किसी पुनः प्रयोग विधि के रूप में प्रतिकृति या इस्तेमाल वर्जित है।
नयी दिल्ली द्वारा मुद्रित

हमारा लक्षयः हर बच्चा आनंद और अर्थवत्ता के लिए पढ़ें।

कथा एक पंजीकृत आलंभकारी संस्था है जिसकी स्थापना 1988 में किया गया था। कथा शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में काम करती है। कथा का मुख्य उद्देश्य है बच्चों और बड़ों में पढ़ने में रूचि एवं इससे मिलती खुशी को बढ़ावा देना। कथा 1,00,000 से भी अधिक बच्चों के साथ काम करती है ताकि वे मजे के लिए और कक्षा स्तर पर पढ़ सकें।

ए–3 सर्वोदय एन्क्लेव, श्री औरोबिन्दो मार्ग, नयी दिल्ली – 110017
दूरभाषः 4141 6600 - 4141 6624 - 4182 9998
इ–मेलः marketing@katha-org
वेबसाइटः www-katha-org | www-books-katha-org

इस किताब की बिक्री में मिली राशि का 10% बच्चों की शिक्षा के लिए कथा स्कूल को दिया जाएगा।
कथा नियमित रूप से उस लकड़ी के बदले पेड़ लगाती है, जिससे हमारी किताबों को छापने का कागज बनता है।

'I Love Reading' Library कथा की एक खास श्रृंखला है। यह नए और संकोची बच्चों को सहजता से पढ़ना सिखाती है। इसका पाठ्यक्रम अलग – अलग स्तर पर पढ़ने वाले बच्चों को ध्यान में रख कर बनाया गया है। यह बेहतरीन साहित्य और कला को भारत एवं दुनिया भर से एकत्रित कर बनायी गयी है।
यह किताबें गीता धर्मराजन के 'StoryPedagogy' पर आधारित हैं। यह एक खास तरह का मॉडल है जो पहले स्कूल नहीं गए हुए बच्चों के लिए बनाया गया था। बच्चों को 'TADAA' (Think, Ask, Discuss, Act and Achieve) और 'बड़े विचारों' के द्वारा यह उनमें पढ़ने की खुशी और समझने की क्षमता बढ़ता है।

Katha's Holistic Early Learning (KHEL!) लैब सरकारी, निजी और गैर – लाभकारी विद्यालयों में कार्यशालाएँ कराती है। यह ऑनलाइन चलने वाली कार्यशालाएँ हैं। इसमें शिक्षकों, विद्यालय प्रबंधकों और स्वयं सेवकों को प्रमाण पत्र भी दिया जाता है।
अधिक जानकारी के लिए 300m@katha-org पर जाएँ।

यह सभी आई.एल.आर किताबें हैं

आनंद और समझने के लिए पढ़ो

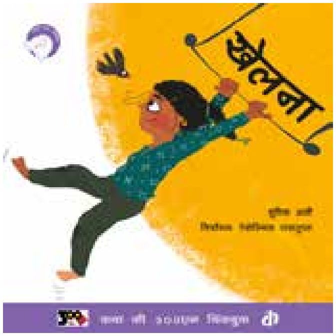

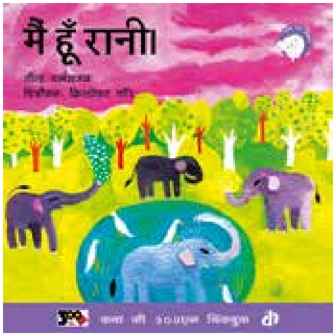

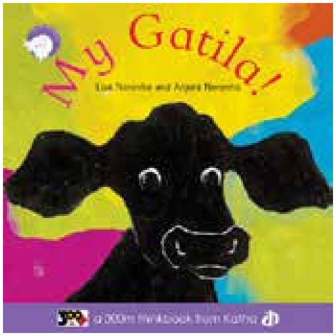

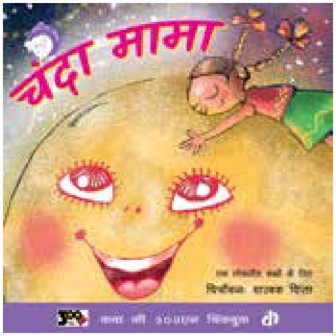

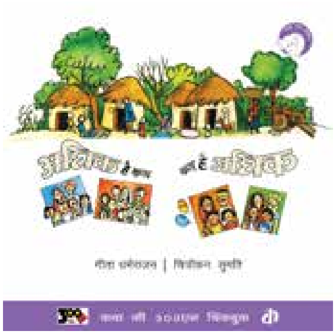

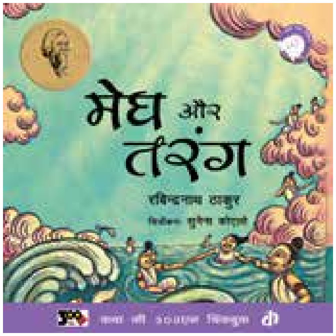

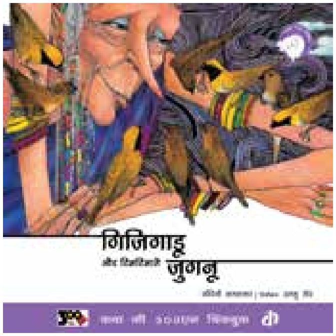

FOR OUR BOOKS

www.books.katha.org

"India's multicultural identity through the stories."

— The Pioneer

a katha book
for children
ISBN 978-93-88284-81-3
9 789388 284813
www.katha.org
₹ xxx

इसकी इंडियो श्रृंखला में